धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

अक्तूबर 2009

* मनुष्य की अवश्यकता

* सत्य धर्म बोध उत्सव

* अभी बहुत कुछ शेष है!

* पद प्रभुत्व और ईमानदारी

* शुभ संग्राम

प्रचार विभाग के कर्मचारियों में किस किस प्रकार खूबियों के पैदा होने की नितान्त आवश्यकता है जनवरी सन् ई०

1) प्रचार विभाग के कर्मचारी प्रचार के काम के प्रोग्राम के साथ-साथ अपनी जिंदगी का नियमित प्रोग्राम अपने सामने रखते हों और उसके अनुसार अपनी एक या दूसरी नीच शक्ति के अधिकार से उद्धार लाभ करने और एक या दूसरे उच्च भाव को उत्पन्न और उन्नत करने के लिए अपने जीवन दाता सत्य देव के देव रूप तक पहुंचने और उनके देव प्रभावों के लाभ करने की कुछ न कुछ योग्यता रखते हों और उन प्रभावों को जहां तक संभव हो, अपनी योग्यता के अनुसार प्रतिदिन लाभ करने का संग्राम करते हों।

2) वह अपने क्षेत्र के सेवकों और सेवकाओं को अपने साथ जोड़ कर उनका और अपना आत्मिक नाश करने की बजाए उन्हें जीवनदाता देवात्मा के देव रूप के साथ जोड़ने और उनके साथ उनका आत्मिक संबंध पैदा करने और बढ़ाने वाले श्रद्धा, विश्वास, कृतज्ञता और आकर्षण आदि उच्च भावों में से किसी एक या कई के पैदा या उन्नत करने की न्यूनाधिक योग्यता रखते हों

3) वह अपने आत्मा को अपने जीवन दाता देवात्मा के देव रूप का आश्रित और उनके देव प्रभावों का सदा भिखारी और अपने मंडल या क्षेत्र के सेवकों सेवकाओं का केवल आत्मिक सेवाकारी बोध करते हों और उनके दु:ख सुख और उनकी एक या दूसरी विपद या उलझन में उनके लिए सहानुभूति का भाव रखते हों। और न केवल उनमें से किसी को बल्कि उनके भिन्न किसी और मनुष्य को कभी और किसी सूरत में घृणा न करते हों और किसी के प्रति द्वेष या ईर्षा का भाव न रखते हों और उनके साथ अपनी ओर से अपने दिल में हमेशा सद्भाव रख सकते हों और उन से कभी फट न जाते हों। इस के भिन्न उन्हें अपनी या अपने पारिवारिक जनों की एक या दूसरी प्रकार की सामग्री न समझते और न बनाते हों।

4) वह अपने क्षेत्र के सेवकों या सेवकाओं की किसी क्रिया से यहां तक कि उनकी अनुचित क्रिया से भी उनके दुश्मन न बन जाते हों। इत्यादि-इत्यादि!

धर्म जीवन

खण्ड 21 अंक 10

अक्तूबर 2009

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मनुष्य की अवश्यकता

विश्व में विकास का नियम बहुत अद्‌भुत है और इसका क्रम निरन्तर चल रहा है। क्या यह वचित्र बात नहीं कि एक आग का गोला ठण्डा होकर ठोस धरती वा पानी का रूप धारण कर गया, उसी अद्‌भुत नियम के अनुसार लाखों वर्षों में जीव जन्तु, पौधे, पशु वा मनुष्य उत्पन्न हो गए। उस समय के मनुष्य की और आज के मनुष्य की तुलना करो तो इस अद्‌भुत नियम के क्रिश्मों का कुछ आभास हमें हो सकता है।

विकास के इस नियमानुसार मनुष्य, नई क्षमताओं, वा योग्यताओं को लेकर जन्मते आए हैं, उन्होंने एक-एक पक्ष में वह नेयमतें बख्शी हैं, उनको जानने, पहचानने से मनुष्य अनन्त लाभ प्राप्त कर रहा है और कर सकता है।

इस विकास के नियम ने ही सात्विक जीवन धारी पैदा किए, फादर डैमियन, मदर टैरेसा, महात्मागांधी और अनगिणत जन पैदा किए हैं, जिन्होंने एक-एक पक्ष में नये आयाम पैदा किए हैं।

इसी विकास के नियम के अनुसार एक अद्‌भुत अध्यात्मिक योग्यता लेकर देव धर्म के पूज्यनीय बानी पैदा हुए जिन्होंने अध्यात्मिक जगत को रोशन किया है। उनकी अलौकिक योग्यता है उनका सत्य और शुभ के प्रति पूर्ण प्यार, झूठ और बुराई के प्रति पूर्ण घृणा का भाव। इसी अद्‌भुत योग्यता से नई रोशनी वा नये बल की उत्पत्ति हुई है। उस रोशनी में उन्होंने नये अध्यात्मिक सत्य खोजे और नया लक्ष्य धारण किया।

अपनी इस अद्‌भुत रोशनी में अनोखी सचाईयां देखी, जो आज तक किसी ने नहीं देखी थी। उन्होंने देखा कि :-

1) मनुष्य की प्रकृत अर्थात् वास्तव में प्रकृति क्या है? अन्य धर्मों ने मनुष्य को रब का स्वरूप, देवत्व का प्रकाश, ब्रह्म स्वरूप ही देखा और प्रचार किया, पहली बार देवात्मा ने मनुष्य के असली रूप का पर्दाफाश किया है।

2) उन्होंने देखा कि मनुष्यमात्र सब का सब सुख अनुरागी है, दुख को घृणा करता है। सुख अनुरागी होने के कारण ही वह पाप परायण है। सुख अनुरागी प्रकृति के लिए अवश्यक है कि वह सुख

प्राप्ति के लिए पाप करे, स्वार्थी बने, अपहरणकारी बनें, दूसरों का हक छीने। पापियों के साथ जेलें भरी हुई हैं, उन्होंने जो भी पाप किया, सुख प्राप्ति के लिए ही किया था, हस्पतालों में मरीज़ अधिकतर खाने की सुख लालसा का ही नतीजा भुगत रहे होते हैं। आतंकवाद मनुष्यों के सुख अनुरागों की ही उपज है। पांच-2, सात-2, वर्ष की बच्चियों के साथ बलात्कार करने को काम वासना का प्रबल सुख अनुराग ही उकसाता है। नशे के सुख से किस-किस प्रकार की भयानक बर्बादी आती है। भ्रूण हत्या, दहेज के लिए हत्या के पाप धन का सुख अनुराग ही करवा रहा है। चारों तरफ बेईमानी, भ्रष्टाचार की न बुझने वाली आग जल रही है, उसमें दूसरों पर क्या ज़ुल्म होते हैं, यह अन्दाज़ा लगाना एक सुख अनुरागी मनुष्य के लिए असम्भव है। देवात्मा ने अपनी रोशनी में देखा कि ऐसे घिनौने काम करने वाला मनुष्य परमात्मा का रूप कैसे हो सकता है?

3) पूजनीय भगवान ने यह भी देखा कि मनुष्य अपन नीच सुख अनुरागी प्रकृति के कारण सदा अन्धेरे में रहता है। उसे अपना आप ठीक-ठाक दिखाई देता है, उसे अपना हानिकारक रूप दिखाई नहीं देता। मनुष्य कितना झूठा, कपटी वा मक्कार है, उसे वह अपने आप देख नहीं सकता। ''मैं'' वा ''अहं'' का अन्धकार इतना गहरा है कि मनुष्य अपने आपको ठीक ठाक, अच्छे निर्दोष वा सुन्दर रूप में ही देखते हैं।

4) उन्होंने देखा कि यदि मनुष्यों को अपना असली पापी और झूठा रूप नज़र नहीं आया तो वह कभी भी नारकिय दुखों और अपने नाश से नहीं बच सकते। क्योंकि अपनी पाप-परायण दूषित प्रकृति के कारण ही सारा मनुष्य जगत सदियों से दुखों का और विनाश का शिकार हो रहा है। घर-घर क्लेश, झगड़ा, गरीबी, बिमारी, असफलता, का रोग है। ''दुनियां दुखों दा घर है'' ''घर घर यही आग'' यह सत्य महापुरूषों ने देखे हैं, परन्तु इसका सही कारण अब तक मनुष्यता देख नहीं सकी। बस यही देखा है, 'करन करावन आपो आप।''

5) गुरु महाराज ने देखा कि मनुष्य को पूजा, पाठ, नमाज़ों की, मन्दिरों, गुरुद्वारों की, गिरजों, मसीतों आदि की ज़रुरत नहीं, उसको उस वचित्र ज्योति की परम अवश्यकता है, जो उसे उसका पापी, झूठा, नीच, दुष्ट, अपराधी और पिशाच रुप दिखा सके। उसको झूठे धर्म के नाम पर अडम्बरों के स्थान पर उक्त ज्योति की आवश्यकता है। उसको ऐसे अद्भुत तेज वा बल की अवश्यकता है, जो उसे इस पिशाच हालत से मुक्त कर सके और मनुष्य भला वा हितकर रूप ग्रहण कर सके।

आज तक न तो किसी धर्म ने मनुष्य की उक्त अवश्यकताओं को दिखाया है और न ही उन्होंने उसकी पूर्ति की है और न ही वह कर सकते थे, क्योंकि उनके आर्विभाव से पहले किसी के भीतर भी न तो देव शक्तियों का विकास हुआ था और न ही उनसे उत्पन्न देव ज्योति और देव तेज प्राप्त हुआ था। किसी गुरु पीर, खुदा, वाहगुरु में मनुष्य का असल रूप दिखाने की क्षमता ही नहीं थी।

परम पूजनीय भगवान ने इस अद्भुत क्षमता

के साथ घोर अपराधी जनों को बदला है, उनका असली रूप दिखाकर उससे निजात पाने का बल दिया है। सदियों से बहुत देवी देवता इस संसार में आए, परन्तु किसी ने भी मनुष्यों को पाप जीवन से उद्धार देने का बीड़ा नहीं उठाया। वह ऐसा कर भी नहीं सकते थे। जैसे पानी के बिना खेती वा बागबानी नहीं हो सकती, उसी प्रकार अद्‌भुत ज्योति के बिना मनुष्य का पापी रुप नहीं दिखता और उच्च भाव उत्पादक देव तेज के बिना, पापी रुहों को बदल कर नेक वा धर्मी कोई नहीं बना सकता।

इसलिए हम धर्म स्थानों पर कहीं भी ऐसा नहीं देखते कि जहां पापी, नीच दुर्बल और मलीन जन अपने भयानक नीच जीवन को घृणित रूप में देखकर व्याकुल होकर खड़े होते हों और उस पर शोकातुर होकर दुखी होते हों। अपनी नीचता पर दुखी होकर धाएं मार-मार कर रोते हों और उस अवस्था से निकलने के लिए प्रयत्न करने लगें। बिना पानी खेती की तरह उक्त देव ज्योति और देव तेज के बिना उक्त दृष्य कहीं प्रगट नहीं हो सकते।

पुराने ग्रंथों में बताए हुए पाठ, पूजा और जाप, नमाज के साधनों आदि के साथ किसी को भी अपनी नीचता दिखाई नहीं देती। कोई अपने नीच जीवन पर पश्चाताप नहीं करता और न ही किसी का निरन्तर सुधार ही होता है। यदि ऐसा होता तो अब तक मानव समाज का बेहद सुधार हो जाता। मनुष्य फरिश्ते और देवते बने दिखाई देते। धर्मो के फैलाव के साथ धर्म साधनों की, पाठों, जापों और नमाज़ों का हड़ आ गया है, परन्तु मनुष्य पहले से अत्याधिक पापी, दुष्ट और अपराधी बन गया है। जाप, पाठ की औषधी रता भर ही कारगर नहीं हो रही।

जैसे X-Ray, सकैनिंग, MRI और ऐंजोग्राफी और सर्जरी ने मनुष्य के शारीरिक रोगों में नई सफलताओं का इन्कलाब ला दिया है। उसी प्रकार परम पूजनीय भगवान देवात्मा की आद्वितीय रुहानी रोशनी और अद्वितीय देव तेज के साथ रोगी, पापी, मलीन हृदयों के भीतर सच्चे ईलाज के सुधार का सच्चा, ठोस इन्कलाब पैदा हो रहा है। जिस प्रकार X-Ray, M.R.I. ऐंजोग्राफी के साधनों के बिना ठोस शारीरिक ईलाज असम्भव है, उसी प्रकार परम पूजनीय भगवान देवात्मा की अपने अन्दरुनी रुप को दिखाने वाली अद्‌भुत ज्योति और नीचता मिटाने और उच्चता को उपजाने वाले देव तेज के बिना मनुष्य पापी, रोगी हृदयों का ईलाज और सुधार असम्भव है। आखिरकार मनुष्य को परम पूजनीय भगवान देवात्मा की अद्‌भुत विशेषता और उनकी देन को देखना होगा और स्वीकार करना पड़ेगा। और अपनी रोगी रुह के विनाश से बचने का और अपनी सच्ची रक्षा और सुधार और विकास का मार्ग जानना पड़ेगा और अपनाना पड़ेगा। अपनी सबसे पहली और वास्तव ज़रूरत को समझना पड़ेगा और परम पूजनीय भगवान देवात्मा के दर के साथ जुड़कर उसकी सच्चे अर्थों में पूर्ति करनी पड़ेगी।

बलदेव सिंह

सत्य धर्म बोध उत्सव

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी सत्य धर्म बोध उत्सव 28 अगस्त से 30 अगस्त तक मनाया गया। इस प्रोग्राम का पता पत्रिकाओं द्वारा वा कुछ निमन्त्रण भेजकर दिया गया।

उत्सव से पहले 23 अगस्त से 27 अगस्त तक प्रतिदिन शाम के समय, 3154 सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ (मन्त्री देव धर्म के निवास) में सभाएं होती रही। इन सभाओं में लोकल सेवक वा 1-2 अन्य जन भी आकर शामिल हुए। यह सभाएं श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इसमें एक नई उच्च शिक्षा प्राप्त स्त्री भी आकर शामिल हुई, 28 अगस्त से उत्सव सम्बन्धी सभाएं आरम्भ हुई। खुशी की बात है विशेष सम्मान के योग्य श्रीमती विद्यावती जी खेड़ा 94 वर्ष की उमर में किसी का सहारा लेकर बीसियों सीढ़िया चढ़कर शामिल होती रही और एक-एक सभा में प्रभावित होकर फूट फूटकर रोती रही। किरण मैडम M.A., B.Ed., बावजूद एक पैर पर पलस्तर लगा होने के वह आकर सब सभाओं में शामिल हुई।

उत्सव के लिए पिछले वर्षों की तरह श्रीमती शुभवती धर्मशाला सैक्टर-18, चण्डीगढ़ के मेहरबान प्रबन्ध से पूरा सहयोग प्राप्त हुआ। ऊपर का फ्लोर जो हमें दिया गया, उसकी सफाई, सजावट, बिछाई आदि के लिए मधुसूदन जी और श्री प्रदीप जी ने बहुत सहायता की। शानदार हाल तैयार हो गया, कुर्सियों आदि का प्रबन्ध भी किया गया।

यात्रियों के भोजन के लिए 2 सहायक रखे, राशन, बर्तनों सैलण्डरों आदि का प्रबन्ध किया, डेरा बस्सी कालिज से भी बर्तनों की सहायता ली गई। जगदीष जी के बड़े भाई के देहान्त के कारण उन्हें अचानक जाना पड़ा, परन्तु पूजनीय भगवान की छवि के लिए सुन्दर हारों का प्रबन्ध मधुसूदन जी और बाबू जी ने किया।

सभाओं में सुन्दर भजनों का गान श्रीमान सुनील जी दत्ता पाक खुशी से भरकर करते रहे।

उत्सव में शामिल होने के लिए, यू. पी., पंजाब, हरियाणा, गुजरात, राजस्थान वा लखनऊ से यात्री पहुँचे। देहरादून, खतौली, मेरठ, लुधियाना, गोनियाना, संगरूर, थराजवाला, कल्याण, मोहाली, चण्डीगढ़, पंचकूला, दड़वा, जमुना नगर, केसूपुरा, मल्लेका, गुजरात, गंगानगर, गजसिंह वाला, पुर, बंगे, तलवंडी भाई, लखनऊ वा पदमपुर आदि स्थानों से यात्री पहुंचे। उत्सव में लोकल परिवार भी शामिल होकर लाभ उठाते रहे।

सभाओं में बहुत अच्छी संख्या में जनों की गिणती रही 70-80 के लगभग हाज़री होती रही। एक इन्कमटैक्स अफ्सर और एक रिटायरड जज भी परिवार समेत शामिल हुए।

सभाएं श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और विनोद जी खेड़ा ने करवाई और काफी प्रभावशाली सभाएं हुई। सुन्दर दृश्य वा मण्डल पैदा होता रहा। श्रीमान ओम प्रकाश आदर्श जी ने भी सुन्दर गीत पेश किया।

किताबों की छोटी स्टाल लगाई गई, श्रीमान वर्मा जी और साथी इसमें सहायक होते रहे वा देव बाणी के सुन्दर माटोज़ लगाए गए। पूजनीय भगवान की बड़ी छवि भी शोभामान थी। अन्य उच्च कर्मचारियों के भी फोटोज़ लगाए गए।

सभाओं का संक्षेप हाल इस प्रकार है :-

प्रवेश सभा :– 28 अगस्त 2009, समय 5.00 बजे।

पहला भजन ''हमारे पूजनीय सत्गुरु जी तुम हो धन्य'' नामक भजन सुनील जी दत्ता ने शुरू किया और अन्य धर्म सम्बन्धियों ने सहयोग दिया। फिर गुरु महाराज की सुन्दर छवि का सभापति जी और मन्त्री देव धर्म ने अर्चन किया। देव स्तोत्र का समूह गान वा हृदयगत भावों से उसकी व्याख्या की गई।

सभा की सफलता के लिए सभापति जी ने ज़ोरदार प्रार्थना की। उनका हृदय भरा हुआ था और धर्म सम्बन्धी भी हृदयगत भावों से गुरु महाराज के चरणों मे झुक रहे थे। उसके बाद फिर भजन का गान हुआ।

फिर सभापति जी ने ''सत्य धर्म की विशेषता'' पर वर्णन आरम्भ किया और बताया कि पुरातन काल में चार वर्ण, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वा शुद्र बनाए गए। चार ही आश्रम, ग्रहस्थ, वनप्रस्त वा सन्यास आश्रम बनाए गए।

एक शूद्र जो धर्म की बातें करता था, उसे श्री राम जी ने मार दिया। ऋषि सम्बूक तपस्या करते थे, उसका विरोध हुआ जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य आदि एक ही होते है, उसी प्रकार सत्य धर्म भी एक ही हो सकता है। सत्य ज्ञान नेचर पर अधारित होता है, सत्य धर्म नेचर को अथारटी मानता है। किसी व्यक्ति विरोष को आथरटी नहीं मानता। यह नेचर के नियमों पर अधारित है। नेचर के नियमों पर जो खरा नहीं उतरता वह सत्य धर्म नहीं। सत्य धर्म में रुहानी रोशनी होती है, उसमें आत्मा के सम्बन्ध में ज्ञान होता है। सत्य धर्म में तेज वा बल होता है।

नेचर के नियमों की व्याख्या की गई। सात्विक रोशनी ठीक और खराब की सोझी देती है। सत्य धर्म की रोशनी आत्मा के भले बुरे की सोझी देती है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की देव ज्योति यह होश देती है। देव धर्म का यह दावा है।

सत्य धर्म के भीतर ज्योति और तेज के कारण मनुष्य जीवनों में परिवर्तन होते हैं।

डॉ. मनसा सिंह जी 10 – 12 धर्मो में फिरे, परन्तु वह परिवर्तन उनमें वह पैदा नहीं कर सके, जो देव धर्म ने पैदा किया। सत्य धर्म की तीन विशेषताएँ हैं :-

1) नेचर के नियमों पर अधारित ज्ञान
2) रुहानी रोशनी
3) रुहानी तेज वा बल होना अवश्यक है

यहां पर उत्सव मनाने के लिए सत्य धर्म के वातावरण में जो जन पधारे थे, उनका सभापति जी ने खड़े होकर स्वागत किया।

सत्य धर्म में सच्चे परिशोध होते हैं। सच्ची करामातें पैदा होती हैं। श्रीमान प्रेमचन्द जी का परिवर्तन सुनाया और बताया कि यहां दिलों की गन्दगी धोई जाती है, सम्बन्धों में स्वर्ग आता है। फिर सभाओं से लाभ उठाने के नियम बताए। एकाकारी पहन कर आना, समय पर आना, निन्दा चुगली से बचे रहना, गुण चिन्तन वा उपकार स्मरण

करने, इससे हृदय अधिकारी अवस्था में आता है। भजनों का गान वा उत्सव की सफलता की कामना करने से दिल सरस होता है।

सभापति जी के ब्यान के बाद मन्त्री देव धर्म ने भी सब यात्रियों का स्वागत किया। गुरु महाराज के देव प्रभावों की महिमा का कुछ वर्णन किया। अगले दिन का प्रोग्राम बताया और भोजन और ठहरने सम्बन्धी सूचनाएं बताई। चार बार जय ध्वनि करके यह सभा समाप्त हुई।

28 – 8 – 2009 सुबह 8.30 बजे

देव स्तोत्र के समूह गान वा व्याख्या के बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने उत्सव की सफलता के लिए हृदयगत आशीर्वाद प्रार्थना की। सुनील जी दत्त ने ''मुझको मेरा बोध कराओ'' नामक भजन का गान किया।

श्रीमान जी ने उस दिन के विषय ''आत्म बोध के लाभ'' आत्म अबोधता की हानियों पर वर्णन करते हुए श्री गुरु गोबिन्द सिंह जी के इस वाक से अपना ब्यान आरम्भ किया कि :-

''निष्कलंक कोई आएगा, नया वाक्य सुनाएगा।''

उन्होंने बताया कि विकास का क्रम वचित्र कार्य कर रहा है। मनुष्य का शरीर सम्पूर्ण कर दिया, परन्तु आत्मा के विचार से मनुष्य की गठन अधूरी है। विद्या द्वारा मनुष्य के दिमाग का विकास होता है। विकास के क्रम ने देवात्मा को सच्चाई का पूर्ण अनुराग, भलाई का पूर्ण अनुराग प्रदान किया है। आत्मा बोध का अर्थ है अपने आपका बोध।

''जो कुछ हम अपने आपको समझते हैं, हम वह हैं नहीं, और जो कुछ हम वास्तव में हैं, उसकी हमें अपने आप समझ नहीं आती और न अपने आप आ सकती है।'' हमें कौन चलाता है? हमें हमारे भाव चलाते हैं। हमें अपने धन अनुराग की गुलामी का बोध नहीं है, संगत का बोध बहुत उच्च बोध है। यदि मुझे कोई राज भी दे देवे, परन्तु संगत छोड़ने का सौदा करे तो मेरे लिए यह महंगा सौदा है। इस संगत की कोई कीमत नहीं। हमें प्रभावों का बोध नहीं। जो शराबी के पास, वेश्वाओं के पास बैठता है, कसाईयों के पास बैठता है, उसको प्रभावों का बोध नहीं है। प्रेम जी, रजिन्द्र जी, सुन्दर लाल जी के बेटे, श्री इकबाल जी आदि के परिवर्तन की शानदार उदाहरणें पेश की। यदि यह जन ऐसे प्रभावों में बार-बार न आएं तो समझो हमें देव प्रभावों का बोध नहीं। इसलिए संगत में आना छोड़ देते हैं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा फरमाते हैं :-

''मनुष्यात्मा सब पागल हैं, जो पागलखाने में बंद हैं, वह अधिक पागल हैं, बाकी कम पागल हैं,'' जो धन का प्रेमी है, उसे धन अनुराग खा जाएगा, जैसे जंग अहिस्ता-अहिस्ता लोहे को खा जाता है। हम सब सुखार्थी वा स्वार्थी हैं। पर हमें इसका बोध नहीं। कौन सी शक्ति हमें किस सीमा तक चलाती है, वह भी हम नहीं जानते। नीच शक्ति से भय पैदा नहीं होता। श्रीमान गुरुबख्श सिंह जी ने कहा था कि मनुष्य अपना ही दुश्मन है, वह किसी का दोस्त कैसे हो सकता है।

आखिर में सभापति जी ने बड़ी व्याकुलता के साथ भरे हृदय से और तर आंखों से हाजरीन का ध्यान देव प्रभाव दायक संगत के प्रति गहरे विवेक पैदा करने की तरफ फेरा। ठोस जिन्दा उदाहरणों के

द्वारा बताया कि किस-किस जन को क्या-क्या लाभ हुआ है, ऐसे कीमती वातावरण से उदासीनता महा मन्द भाग्य है। सभा बहुत प्रभावशाली थी, आखिर इन शब्दों के साथ सभा को समाप्त किया :-

''अलम वांग युनान दे बादशाह दे, सुन सुनाके हो गुमराह नहीं, अमृत दे कुण्ड ते पहुंच के तू बिन पीतियां उठके जा नहीं''

दूसरी सभा :- सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

भजन :- ''मुझे मेरी हालत दिखाओ हे भगवन''

विषय : स्वस्तित्व के सम्बन्ध में आदेशों को सभापति जी ने 9 भागों में बांटा :-

1) अपने आत्मा वा शरीर के सम्बन्ध में ज्ञान।
2) विश्व के साथ अपने सम्बन्ध में ज्ञान।
3) नीच और उच्च गतियों के सम्बन्ध में ज्ञान।
4) अपने मुख्य लक्ष्य के सम्बन्ध में ज्ञान।
5) आत्मिक मोक्ष और विकास के सम्बन्ध में ज्ञान
6) मोक्षदायक और विकासकारी देव प्रभावों की प्राप्ति के विषय में ज्ञान
7) देव प्रभावों के स्त्रोत देवात्मा के देवरुप का ज्ञान
8) देवात्मा के सम्बन्ध का बोध और ज्ञान।

नेचर क्या है, यह समझाया गया। सच्चा ज्ञान प्राप्त किए बिना मनुष्य अन्धा रहता है।

सबसे मुख्य ज्ञान आत्मा के विषय में है। आत्मा के भीतर धन अनुराग की शक्ति का ज्ञान न होने से एक डाक्टर लगातार कई घण्टे अप्रेशन करते रहे और वही मर गए। शरीर और आत्मा दोनों कीमती हैं, परन्तु आत्मा मुख्य है, क्योंकि शरीर के मरने पर आत्मा दूसरा शरीर निर्माण कर सकता है, परन्तु आत्मा के ही खत्म हो जाने पर शरीर और आत्मा दोनों खत्म हो जाते हैं। शरीर आत्मा का निर्माण नहीं कर सकता। इसलिए शरीर और आत्मा दोनों का ज्ञान ही अवश्यक है।

माता पिता के विशेष सैलों के मेल से नई जीवनी शक्ति बनती है, वही आत्मा है, वही शक्ति शरीर का निर्माण करती है।

हमारा अस्तित्व विश्व के चारों जगतों पर निर्भर है। भौतिक जगत, वनस्पति जगत निर्जीव होकर भी हमें जीवन दान देते हैं। हम पशु जगत वा मनुष्य जगत पर निर्भर हैं। इस प्रकार हम चारों जगतों से जुड़े हुए हैं। हम विश्व के अंश हैं, किसी भी अस्तित्व की हानि करना पाप है, नीच गति है। धन हमारा लक्ष्य नहीं है, धन ही हमारा शत्रु बन जाता है। Money Madness Race में सारा संसार दौड़ा फिरता है।

Pop Star माईक जैक्सन काले से गोरा बना करोड़ों डॉलर कमाए, परन्तु जवानी में ही चल बसा।

प्रत्येक नीच गति से मोक्ष और उच्च गति से द्वारा विकास पाना हमारा लक्ष्य है।

जहां तक धन, सम्पद, विद्या मानपद, उपाधि सन्तान आदि सुख हमारे मुख्य लक्ष्य में सहायक हैं, वहां तक उनकी प्राप्ति उचित है, इससे आगे नहीं।

आत्मिक मोक्ष क्या है? इसको अच्छी तरह

समझाया गया। यदि युधिष्टर जूए में पत्नी को न हारता, तो इतिहास और ही होता। जूए से मोक्ष पाने की अवश्यकता है।

काम अनुराग से मोक्ष सच्ची मोक्ष है। जूनियों से कोई मोक्ष नहीं होती, यह सब मिथ्या है।

मोक्ष दायक और विकासकारी देव प्रभावों के ज्ञान की अवश्यकता है। देव प्रभावों की कदर के बारे में ब्यान किया।

तीसरी सभा, शाम 5 बजे

विषय :– गुरु महाराज के देव प्रभावों का अद्वितीय कारज''

सभापति जी :– डॉ. विनोद जी खेड़ा–''मेरे जीवन के दाता, तुमरी महान महिमा'' नामक भजन का गान किया गया। उन्होंने ब्यान किया कि सचमुच ही अपने आपको बेदी पर बैठने के योग्य नहीं समझता। हज़ारों इन्सानों के जीवनों में परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आद्वतीय कारज हुआ है।

पहले उन्होंने किसी जिज्ञासु की जिज्ञासा अनुसार परलोक के विषय में कुछ सचाईयां बताई कि किस प्रकार मृत्यु के समय शरीर से सूक्ष्म सैल निकल कर नये शरीर का निर्माण करते हैं। नीच गतियों से निर्माणकारी शक्ति घटती है। परलोक में हमारे जीवनों के स्तर के अनुसार ही अलग–अलग लोक हैं।

किसी–किसी जन में यह योग्यता होती है कि उसके द्वारा परलोक वासी सन्देश दे सकते हैं। एक लड़का छटी क्लास में पढ़ता था, उसके हाथ पर असर होता था। सबसे पहले उस लड़के के दादा जी आए, फिर सुभाष चन्द्र जी बोस आए। 1960 की बात है। तीसरे मेरे नाना जी श्री मदन मोहन लाल जी आए। एक लड़के की मौत का पूरा विवरण दिया, जो किसी को पता नहीं था, कि कैसे उसकी मौत हुई थी। उस लड़के को अंग्रेजी बहुत कम आती थी, परन्तु उसने अंग्रेजी में लिखा। यह प्रश्न था कि मरने के बाद क्या होता है? नीच गतियों के द्वारा सूक्ष्म सैल जो स्थूल सैलों के साथ Attached होते है, उनको हानि पहुँचती है।

इसके बाद उन्होंने देवात्मा के अद्वितीय कारज के विषय में ब्यान किया। अद्वितीय क्या होता है? जिस जैसा कोई न हो। यह कारज श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी के जीवन में हुआ। 1908 में उन्होंने F.C. College लहौर से बी. ए. पास की। परन्तु अपने दुनियवी सुनहरे भविष्य को छोड़कर गुरु के चरणों की सेवा में अपनी श्रद्धा की तृप्ति ढूंडी। सोलन में मशकों द्वारा पानी नीचे चश्मों से पहाड़ी पर ले जाकर इतने फूल लगा दिए कि उसे फूलों वाली कोठी कहने लगे।

मोगा लड़कों के स्कूल में हैडमास्टर का पद सम्भाल कर बच्चों के जीवनों में परिवर्तन पैदा किया। अपनी धन, सैंकड़ों बीघे ज़मीन भी गुरु मिश्न में भेंट कर दी।

श्रीमान गुरुबख्श सिंह जी कम पढ़े लिखे थे। परन्तु उन्हें जीवन का बोध था। मैं Ph.d था और भाग 2 कर लंगर में खाना खिला रहा था। उन्होंने मुझे बताया कि यह आप सेवा नहीं कर रहे, यह काम है जो आप कर रहे हों। कुछ समय सोचने पर मुझे यह बात समझ में आई कि मैं तो सचमुच मान बड़ाई के लिए काम कर रहा था, उनका भाव यही था कि यह निस्वार्थ सेवा नहीं है। उसके बाद

मैं 14 वर्ष तक स्कूल में सेवा की और इस पहलु में काफी चौकस रहा। इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने ब्यान किया कि प्रत्येक अस्तित्व असर छोड़ता है। अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार हम भले या बुरे असर छोड़ते हैं। प्रिंसीपल गंगा सिंह जी अमरीका सिक्ख धर्म का प्रचार करने गए। वहां के असरों में दाड़ी केस कटवा दिए। गांधी जी बुरे प्रभावों में घिर गए और बर्बादी से बाल-बाल बच गए।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के भीतर सत्य और शुभ के प्रेम ने अश्चर्यजनक काम किया है। उनके इस प्रेम के कारण उनके भीतर निराली ज्योति वा बल था, जिससे अधिकारी जन उसे पाकर पाप वा मिथ्या छोड़ने के लिए मजबूर हो जाते थे। मनुष्यों में प्राय: पाप शक्तियां हैं। शराबी सदा दुखी होता है। ग़ालिब जैसा योग्य जन शराब के कारण रुसवा होकर मरा। सरदार हरनाम सिंह जी देव प्रभावों के द्वारा बदल गए। नशों से घृणा पैदा हो गई। उनके परिवार की काया कल्प हो गई, उसको सुनकर अधिकारी हृदय गुरु के आगे झुक रहे थे।

अगले दिन का प्रोग्राम बताया गया और चार बार जय ध्वनि करके सभा समाप्त हुई।

30-8-2009, सुबह 8.30 बजे

सभापति :- श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

विषय :- गुरु महाराज का पाप जीवन मिटाने का, उच्च जीवन लाने का अनोखा कारज।

पहले दो भजनों का गान किया गया, ''बिना तुमरे मेरे सत्गुरु, नहीं कोई ठिकाना है'' दूसरा ''जीवन ज्योति के तुम सूरज अन्धेरा दूर करते हो।'' देव स्तोत्र का गान वा व्याख्या की गई और दिल के गहरे भावों से भरकर सभापति जी ने सहाय प्रार्थना की।

सभापति जी ने ब्यान करते हुए फरमाया कि भगवान देवात्मा का कारज अनोखा है। हर जगह ज्ञान बढ़ाने या और कर्म काण्डों की शिक्षा दी जाती है। परन्तु नीच जीवन मिटाने वा उच्च जीवन बढ़ाने का काम कहीं नहीं हो रहा। भगवान देवात्मा के बिना यह किसी के वश में भी नहीं है।

एक नौजवान जो हस्पताल में अब पड़ा हुआ, बड़ा दिमाग है, परन्तु नीच जीवन ने, उसकी बदपरहेज़ी ने उसे मौत के मुंह में धकेल दिया है। मिथ्या का जीवन नीच जीवन है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा सब प्रकार की मिथ्या वा पाप को मिटाने की समर्थ्य रखते हैं। दीवान हासामल जी ने वैश्यों का अड्डा, बहुत बड़ा चकला बनाया हुआ था, गुरु महाराज ने उन्हें बदल दिया। वह सारा चकला खाली करवाकर, और नये सिरे से रंग रोगन करवा कर, नेक इन्सानों को किराए पर दिया। बाबू मदन लाल जी के परिवार का नर्क दूर किया। पिता वा माता का भक्त बना दिया। जहां क्लेश है, तड़पन है, दुख है, वह सब नीच जीवनों के कारण ही है। भलाई लाने के लिए पहले अपने आपको सुधारना होता है। डॉ. सिरी राम जी ने देखा कि जहन्नुम की जड़ तो वह खुद हैं। जब उन्होंने अपनी बहु के पैरों में टोपी रखकर क्षमा मांगी तो घर में स्वर्ग आ गया। जब उनके बेटे ने मां की अनथक सेवा की तो मां बेबस प्रकार उठी, ''बेटा मदन, तुमने तो मेरे पेट पड़े का बदला चुका दिया।''

स्वर्गीय सवित्री जी सिद्धू जो अपनी मां को डायन कहती थी क्योंकि उन्हीं की शादी पर मां ने उसकी तनख्वाह से पैसे खर्च कर दिए थे, जब गुरु के प्रभावों ने उन्हें अपनी मां दिखा दी, उनका उपकारी

रूप दिखा दिया, फिर इतनी सेवा की कि मां कहती थी कि सवित्री मुझे मरने नहीं देती। बसन्त लाल जी ने वर्षों पहले दबाई हुई घड़ी वापिस की। जो-जो परिवर्तन गुरू महाराज ने किए हैं, उनको यदि हम अनुभव कर सकें, तो गुरू के चरणों में झुके बिना नहीं रह सकते। इन्हीं प्रभावों ने रूप चन्द जी जैसे भाई पैदा किए हैं।

इस दर की बेकदरी करना सबसे बड़ा पाप है। देव प्रभावों के बिना नीच जीवन सडांद पैदा कर देते है।

हमारे घरों में जितना नर्क है, वह अधिकतर हमारे स्वार्थ के कारण है। देव प्रभाव ही स्वार्थ से निकाल कर एक-एक पुत्र को श्रवण कुमार बना देते हैं।

हम कंगालों को आत्मिक रूप से अमीर बना दिया। बहुत प्रभावशाली सभा थी।

इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने फरमाया कि मुझे मेरी मां दिखा दी, यह उच्च जीवन पैदा करने का अनोखा कारज है, इससे तन, मन, धन अर्पण करने की अवश्यकता है।

सुनील दत्त जी ने कहा कि मैं पूरा समय गुरू के कारज में लगाने के लिए अपने आपको तैयार कर रहा हूँ। गजिन्द्र जी नये जन ने वायदा किया कि वह सदा के लिए शराब, मांस वा अन्य नशे छोड़ रहे हैं, महोत्सव पर आने के लिए 5 नये जनों ने वायदे किए।

दान की अपील पर 5000 रु० श्रीमती सुरजीत जी बराड़ ने और 5000 श्री डॉ. विनोद जी खेड़ा ने दान में दिए। अन्य जनों ने भी अच्छा दान दिया। इसके बाद भाव प्रकाश की सभा हुई।

भाव प्रकाश

श्री विपिन कुमार जी (बिहारी निवासी, लुधियाना में Central Govt. Tax Dept. के अफसर हैं। उन्होंने बताया कि मुझे अपना गुस्सा नज़र आया है। जब मेरी इच्छा के विरुद्ध कोई बात होती है, तो घृणा पैदा हो जाती है, द्वेष पैदा हो जाता है, मैं इससे निकलना चाहता हूँ। मैंने यहां आकर कुछ ठण्डक महसूस की है। कुछ पुस्तकें भी पढ़ी है। ऐसा धर्म मैंने यहीं देखा है। बहुत ही प्रभावित हुआ हूँ।

श्री रजिन्द्र जी :– मैं दुखी हूँ कि इस दर पर लेट आया हूँ। मेरे बच्चे गुरु महाराज वा अपने बड़ों के सम्बन्ध में प्रणाम का साधन करते हैं। यहां आना बहुत अच्छा लगता है। नये आए सज्जनों को इस संगत से जुड़े रहने की प्रार्थना की। कहा कि महोत्सव पर परिवार सहित शामिल हूंगा।

श्री अरविन्द मदान :– सब बातें अच्छी लगी। लगातार आने की अवश्यकता अनुभव हुई। पदमपुर में कोई सभा न छोडूगा। यह मेरी दिल्ली इच्छा है। सिर तक गन्दगी में डूबा हुआ हूं। इससे निकलना चाहता हूँ।

श्री सुरेश जी :– महोत्सव पर परिवार सहित आऊंगा, बहुत प्रभावित हूं। 29 तारीख की सुबह की सभा बेहद हिलाने वाली थी।

श्री जीवन सिंह :– इन्होंने महोत्सव तक शराब छोड़ने का वायदा किया। महोत्सव पर आकर लाभ उठाने की प्रतिज्ञा की।

श्री प्रेम जी :– 4 स्थानों पर सत्संग किया करूंगा, मल्लेका कम समय निकाल पाता हूँ। मेरे साथी जो मेरे साथ आए हैं, वह मेरी सहायता करें।

लगभग 500 रु० की किताबें बिकी कुछ जनों ने समाजिक पत्रिकाएं लगवाई। एक जन ने अपना भाव प्रकाश लिखकर दिया। जो इस प्रकार है:

मैं पिछले महोत्सव पर आया था। मैंने शराब

छोड़ दी है। 6-7 महीने बचा रहा। परन्तु अब 8 दिन पहले 6 दोस्तों से घिर गया। शराब पी ली और एक दुर्घटना का शिकार हो गया। कपड़े फट गए, चोटें लगी, अब दोबारा मरना नहीं चाहता। माता पिता का जो सन्मान करने लगा था, वह भी छूट गया। सब प्रकार के नीच अनुराग सिर उठा रहे हैं। कमियों से भरता जा रहा हूं। मुझे अब बचाया जाए, नहीं तो मेरा सुधार होना ही असम्भव हो जाएगा। सभा में बैठकर सुधरना चाहता हूं, बाहर जाकर फिर बुरा बन जाता हूं।

समय काफी होने पर सभापति जी ने उत्सव की सफलता के लिए गुरु महाराज वा सहायकारी शक्तियों, उत्सव पर आने वाले यात्रियों, खाने में सहायक होने वाले जनों भजन गाने वालों और धर्मशाला प्रबन्ध का धन्यवाद किया कि जिन सब की सहायता से यह कार्यक्रम सम्भव हो सका।

सबने खड़े होकर देव आरती का गान किया, और चार बार जय ध्वनि के साथ यह कार्यक्रम समाप्त हुआ।

इसके बाद धर्म सम्बन्धियों ने मिलकर फोटोज़ वा माटोज़ उतारे, सब सामान सम्भाला।

सबने भोजन किया और उत्साह वा प्रेरणा लेकर सब धर्म सम्बन्धी विदा हुए।

एक सेवक

अभी बहुत कुछ शेष है!

एक सज्जन लिखते हैं :– मूल्यहीनता के इस दौर में मनुष्य स्वार्थी और आत्मकेन्द्रित हो गया है। यह नहीं कि मूल्य बदलते हैं। वे शाश्वत हैं। हां, उनको मानने वाले बदल गए हैं। बदलाव मनुष्य की सोच में आया है। मूल्य-चेतना कम हुई है। हम आदमियत खोते जा रहे हैं। बात विश्वग्राम की करते हैं, पर पड़ोसी तक को नहीं पूछते। स्वार्थी होने पर मनुष्य की संवेदना समाप्त हो जाती है। तब उसमें नैतिक साहस नहीं रहता। ऐसे में वह किसी की सहायता नहीं कर सकता। माना कि बहुत कुछ बदला है, लेकिन सब कुछ समाप्त नहीं हुआ है। यहां, इस धरती पर, ऐसे लोग भी हैं जिनकी मानवीय एवं नैतिक मूल्यों में गहरी आस्था है। यकीन कीजिए, आज भी दुष्टों एवं बेईमानों की तुलना में भले लोगों की संख्या अधिक है। तभी तो यह दुनिया चल रही है। विश्वास बना हुआ है।

अपने कथन के समर्थन में कुछ सत्य घटनाओं का उल्लेख करना चाहता हूं। एक बार निकट के कस्बे से लौट रहा था। पेट्रोल खत्म हो गया और स्कूटर थम गया। मैं उसे घसीटता हुआ चला आ रहा था। पसीने से बुरा हाल था। दुबली देह से स्कूटर खींचना मुश्किल हो रहा था। तभी सूने मार्ग पर एक गुमटी से, जिस पर 'रशीद ऑटो गैरेज' लिखा था, खिचड़ी दाढ़ी वाले एक सज्जन निकलकर आए, पूछा 'क्या गाड़ी खराब हो गई?' मैंने उन्हें हकीकत बयान की। उन्होंने पसीने से लथपथ मेरे चेहरे को देखा, फिर नली आदि लाकर पास खड़ी अपनी बाइक से थोड़ा पेट्रोल निकालकर

मेरे स्कूटर में डाल दिया, कहा, 'आगे एक-डेढ़ किलोमीटर पर पेट्रोल पंप है, तुम वहां तक आसानी से पहुंच जाओगे।' मैंने उन्हें पेट्रोल के पैसे देने चाहे, मगर उन्होंने हंसकर टाल दिया 'क्या मियां तुम भी.....! मैं अभिभूत था। वहां जात-पात, धर्म, ऊंच-नीच कुछ नहीं था। थी तो सिर्फ मनुष्यता। सहायता, वह भी बिना मांगे।'

दूसरे अवसर पर भोपाल से लौटकर, रात बारह बजे के लगभग पैदल ही घर जा रहा था, शार्टकट से। शार्टकट वाली पतली सड़क सुनसान थी। तभी पीछे से स्कूटर पर एक युवक आया और रुककर बोला, 'भाई साहब! कहां तक जाना है, मैं छोड़ देता हूं। मैं डरा। रात का समय, सुनसान सड़क। कहीं पर्स, घड़ी और मोबाइल छीनकर रफू-चक्कर न हो जाए। मैं संकोच में था, पर उसका आमंत्रण इतना आत्मीय था कि पीछे बैठ गया। रास्तेभर कुशंकाओं से घिरा रहा। चूंकि उसे दूसरी ओर जाना था, उसने मुझे घर से कुछ दूर उतार दिया और फुर्र से उड़ गया। 'धन्यवाद' शब्द सुनने को भी नहीं रुका। इस घटना ने सोच की मेरी पूरी शृंखला को ही बदलकर रख दिया। इसके पूर्व कोई लिफ्ट मांगता था तो न मैं रुकता था, न किसी को लिफ्ट देता था। मेरे लिए अब यह संभव नहीं रह गया था।

मुंबई से लौटते हुए वडोदरा रुका था, सपरिवार। घर पहुंचा तो देखा चाचाजी के घर पर ताला लटक रहा है। मालूम हुआ वे शहर से बाहर गए हुए हैं। पड़ोसी मकान मालिक ने मेरा व मेरे परिवार के उदास-निराश चेहरे देखे तो कहा, 'आप हमारे साथ रुक जाएं। शायद एक-दो दिन में आपके चाचाजी लौट आएं।' दो दिनों तक उन्होंने हमें प्रेम से रखा और खिलाया पिलाया ही नहीं, बल्कि घुमाया फिराया भी। चाचाजी के लौटने पर मालूम हुआ कि मकान-मालिक से उनका विवाद चल रहा है। कई बार 'तू-तू, मैं-मैं' हो चुकी है। बातचीत बंद है। मकान खाली कराने के लिए कोर्ट में मुकदमा चल रहा है। ऐसे में मकान-मालिक की उदारता और इन्सानियत मुझे छू गई। जब महानगरों में कोई अपने रिश्तेदार को अपने यहां टिकाने या बुलाने को तैयार नहीं होता, तब तक शत्रु के संबंधियों का बाल-बच्चों सहित स्वागत-सत्कार करना और विवाद का आभास तक न होने देना, निश्चित ही श्लाघनीय और अनुकरणीय है।

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :-

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

पद प्रभुत्व और ईमानदारी

पद, प्रभुत्व और ईमानदारी यह तीन शब्द हैं, जिनमें सबसे बहुमूल्य चीज़ है ईमानदारी। ईमानदारी से पद या प्रभुत्व तो प्राप्त हो सकता है, परन्तु यह अवश्यक नहीं कि पद प्रभुत्व से आप ईमानदार बन जाएं। पद प्रभुत्व आपकी योग्यता से भी मिल सकता है और चापलूसी वा षड्यंत्रों के द्वारा भी मिल जाता है, जिसकी नींव ही बेईमानी पर होती है। बेईमानी केवल रु० पैसे की नहीं होती, एक-एक पद प्राप्त करने के लिए जब षड़यन्त्र रचे जाते हैं या झूठी तारीफों के पुलबांधकर एक-एक पद को योग्य जनों से हथिया लिया जाता है तो ईमानदारी वहीं समाप्त हो जाती है, फिर बेईमानी का दौर, पब्लिक के पैसे के दुरुपयोग का दौर आरम्भ हो जाता है।

एक-एक जन अपनी उमर में ईमानदार होने का दावा करता रहता है, परन्तु जब उनके ही बच्चे पब्लिक के पैसे से सुख सुविधाएं प्राप्त करने लगते हैं, तो उन्हें स्वयं भी उन सुख सुविधाओं का आनन्द लेने में कुछ भी झिझक नहीं होती तो नैतिक मूल्य गिर जाते हैं।

आज के दौर में हम अपने राजनैतिक नेताओं को देखते हैं, जो साईकल खरीदने की हैसीयत नहीं रखते थे, वह करोड़ों रु० के मालिक क्या ईमानदारी की कमाई से बने हैं? नहीं वह पब्लिक का पैसा अपने स्वार्थ वा अपने बच्चों के स्वार्थ पर लुटा रहे हैं। इस दौर में ममता बैनर्जी जैसी नेता भी है जो अपनी कार से दफतर जाती हैं, अपना बोझ देश की जनता पर नहीं डालती।

धर्म जिन्हें मनुष्य के नैतिक उत्थान का स्त्रोत माना जाता है, वहां तो सारे का सारा पैसा ही भक्त जनों का होता है, उस पर कहलाने वाले धर्म के ठेकेदार अपनी ऐश करते हैं। नैतिकता पर, सच्चाई पर, निस्वार्थ सेवा पर भाषण बहुत होते हैं, परन्तु वह सब दूसरों के लिए। हमारी अन्धी भक्त गरीब जनता यह प्रश्न ही नहीं करती कि जितना धन वह इकट्ठा करते हैं, वह दूसरों के लिए उसमें कितना खर्च करते हैं?

मैंने एक संस्था में देखा कि वहां पर Staff बहुत कम तनख्वाह पर काम कर रहा था, तो प्रिंसीपल ने सिफारिश की कि स्कूल की इतनी आमदनी है कि उनकी 10 या 15% तनख्वाह बढ़ाई जा सकती है, परन्तु एक जन जो स्वयं संस्था की ही गाड़ी पर (जिसे वह अपनी ही समझते थे) आए और गरीब, पूरा दिन बच्चे छोड़कर मेहनतकश, 100% नतीजा दिखाने वाली अध्यापिकाओं का थोड़ा सा भी वेतन बढ़ाने के लिए नहीं माने। अब न कोई धर्म, न कोई पूजा पाठ उन्हें उनकी यह स्वार्थ वा बेईमानी की हरकत को दिखा सकता है।

एक लेखक के विषय में पढ़ा, जो चरित्रवान वा ईमानदार व्यक्ति था। उनकी चचेरी बहन एक सार्वजनिक संस्थान में उच्च पद पर असीन हो गई, उसने अपने चचेरे भाई को उपकृत करने के लिए (भाई भतीजावाद के तहत) प्रस्ताव रखा कि वह उनके विभाग की पत्रिका में भाई का नाम उप

सम्पादक के रूप में दे देगी और छः हजार रु० प्रतिमाह मिलते रहेंगे, चाहे वह कुछ करे या न करे। परन्तु उन्होंने साफ इन्कार कर दिया, उन्हें ऐसा बेईमानी वा सरकारी पैसे के दुरोपयोग का सुझाव तनिक भी पसन्द नहीं आया। उन्होंने साफ कह दिया कि ऐसा अनैतिक काम वह हरगिज़ नहीं कर सकते। इस जमाने में जब इन्सान यश वा पैसा प्राप्त करने के लिए मारे-मारे फिरते हैं, वहां ऐसे ईमानदार व्यक्ति हमारे बहुत सम्मान के योग्य हैं।

एक साहित्यकार की भी ऐसी ही घटना है, उनके निकट के शहर में एक साहित्यक गोष्टी हो रही थी। उस आयोजन में उनकी कोई भूमिका नहीं थी, परन्तु सुनने का शौक था, वह सुनने चले गए। उन्हें लौटते समय आयोजकों ने आने जाने का खर्च वा भत्ता देना चाहा, परन्तु उन्होंने साफ इंकार कर दिया कि जब मैंने कोई भागीदारी नहीं की, तो यह रू० लेना मेरा हक नहीं बनता। आयोजकों ने बहुत ज़ोर दिया, परन्तु वह अपने फैसले पर अड़े रहे। एक अन्य साहित्यकार ने धीरे से समझाया कि हमारा नुकसान क्यों करते हो, परन्तु वह टस से मस नहीं हुए।

ऐसी घटनाओं से हमें अपने भीतर झांकने की प्रेरणा मिलती है, अपनी ईमानदारी को परखने की प्रेरणा मिलती है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के प्रभावों में आकर एक-एक जन ने ईमानदारी की अनोखी उदाहरण पेश की है। पर कहां गए वह लोग, जो किसी की बची हुई साबुन की टिकिया से हाथ धोने पर भी पुकार उठे थे कि "मनोहर लाल बेईमान हो गया"? एक-एक तहसीलदार अपनी घोड़ी का मुंह बांधकर सरकारी काम करते थे, वह समझते थे कि उन्हें कोई हक नहीं कि उनकी घोड़ी किसी का मुफ्त चारा खाए, कहां है वह संस्थाओं के प्रबन्धक जो संस्था का काम करते तो अपनी रोटी-पानी के पैसे देकर आते थे। जो समाज से डाक खर्च तक लेना भी गवारा नहीं करते थे।

जैसे कोई समय था जब देश की आज़ादी के लिए असह्य कष्ट सहने वाले लोग जनता के पैसे का दुरुपयोग अपराध मानते थे, परन्तु अब राजनीति में आने का मकसद ही लोगों के पैसों पर ऐश करना बना हुआ है, अब उस पर ब्रेक लगनी कठिन हो रही है, उसी प्रकार एक-एक संस्था में वह चाहे किसी संप्रदाय से सम्बन्धित हो थोड़ा पैसा लेकर रात दिन मेहनत करने वाले कर्मचारी थे, परन्तु धीरे-धीरे वहां भी बेईमानी ने अड्डे जमा लिए हैं। अब संस्थाओं के पास पैसा तो बहुत है, परन्तु निष्काम भाव से काम करने वाले कर्मचारियों का पूर्ण अभाव है। लक्ष्य से भटक चुके हैं। बेईमानी भारत में, हर समाज, हर संस्था में इतनी गहरी घुस चुकी है कि अब इसे निकालना महा कठिन है। केवल एक मात्र रास्ता है कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का मण्डल बने, जो सधारणतः नहीं बन रहा। कम से कम हम उनके शिष्य तो इस बात को गहराई से समझ सकें और अपनी जो गहरी ईमानदारी की विरासत है, उसे फिर अपनी योग्यता के अनुसार जिन्दा कर सकें, और दूसरों के लिए उदाहरण उपस्थित कर सकें।

सुरजीत बराड़

शुभ संग्राम

श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमती सुरजीत जी बराड़ हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी 4 जून से 16 अगस्त तक अमरीका गए थे।

वहां पर श्रीमान जसविन्द्र सिंह जी चहल कैनेडा, टरांटों से आकर उनके पास 4 – 5 दिन रहे। अधिक समय समाज के विषय में जानकारी प्राप्त करते रहे। वह पहले भी इस प्रकार आकर लाभ उठाते रहे हैं। उन्होंने पत्रिकाओं के लिए 200 रु० और 100 डालर दान में दिए।

श्रीमान बलदेव सिंह जी ने कोशिश की कि वहां पर ईतवार की सभा की जा सकें। कुछ सभाएं की गई। यह सभाएं अंगेजी भाषा में की गई 2 – 3 अमरीकन भी आकर शामिल हुए।

डॉ. नम्रता भी 3 हफ्ते के लिए वहां पहुंची थी, वह भी सभा में शामिल हुई।

डॉ. देव बराड़ (रुबी जी) ने कुछ गुरु महाराज की पुस्तकों का पाठ करने की इच्छा महसूस की।

श्री बलवन्त जी अरोड़ा से कैनेडा में फोन द्वारा सम्पर्क होता रहा। वह गुरु महाराज के कारज के लिए बहुत श्रद्धा रखते हैं। उन्होंने पहले की तरह इस वर्ष भी दान देने की इच्छा प्रकट की।

कल्याण निवासी अवतार सिंह जी (श्रीमान मास्टर भाग सिंह जी के पोते) से भी सम्पर्क किया, वह अच्छी हालत में हैं, समाजिक पत्रिकाएं उनके पास पहुंच रही हैं।

श्रीमान बलदेव सिंह जी ने वहां रहकर 20 के लगभग साथियों के परिवर्तन लिखे, जिन्हें एक किताब के रूप में छापने की कोशिश की जाएगी।

श्रीमती सरोज जी (सपुत्री श्रीमान बाबू धर्म रत्न जी) और श्रीमान राजकुमार जी के सपुत्र श्री मोहित जी का शुभ विवाह बीबी दीपशिखां जी के साथ 2 सितम्बर को सम्पन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में सितम्बर को उन्होंने एक सभा अपने घर में रखी। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने चण्डीगढ़ से जाकर यह सभा करवाई। इसमें 15 – 20 परिवारिक जन आकर शामिल हुए। 1100रु० परिवार की ओर से और 500 रु० सतपाल जी (सपुत्र लाला अर्जुन दास जी मण्डीफूल) ने दान में दिए।

साहित्य :- सामाजिक जन यह जानकर खुशी अनुभव करेंगे कि देव धर्म की ओर से तीन नई पुस्तकें छापी जा रही हैं। गुरु महाराज के व्याख्यान दो भागों में, देवत्व किरणें भाग पांच। भगवान के वचन अंग्रेजी में छापे जा रहे हैं।

4 सितम्बर 2009 को शुक्रवार को गाँव मल्लेका में श्रीमान अजीत सिंह के घर सभा का प्रोग्राम रखा गया।

सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी।

पहली सभा शुक्रवार शाम 4 – 9 – 2009 को 8 बजे रखी गई, इस सभा में 90 जनों की हाजरी हुई।

सभापति जी ने सबसे पहले श्रीमान अजीत सिंह के नये घर बनाने की परिवारक जनों को हार्दिक बधाई दी, फिर बताया कि हम मनुष्य दूसरों को गल्त और अपने आपको ठीक समझते हैं और लड़ाई करते हैं, हमारा स्वार्थ हमें अपने उपकारियों के उपकार

देखने नहीं देता, गुरु महाराज की रोशनी में इन्सान को अपना ग़ल्त रूप दिखाई देता है।

श्रीमान मेहर सिंह सन्धू जी ने अपने गुरु दर से जुड़ने के लाभ बताए और अपने उपकारियों की सेवा का सौभाग्य प्राप्त किया, गुरु महाराज की कृपा से ये सभा बहुत प्रभावशाली रही।

5-9-2009 दूसरी सभा शनिवार सुबह।

सभापति जी ने हाजरीन से पूछा की अमीर कौन होता है, सेहतमंद की क्या निशानी होती है, कुछ जनों ने उत्तर में ठीक ढंग से बताया, बाकी श्रीमान जी ने ठीक से खुलासा किया, फिर पूछा कि धर्मवान कौन होता है धर्म के भाव बताए गए, शुक्रगुजारी के भाव पर सारी सभा कि गई।

यह सभा बहुत दिलचस्प रही, इसमें कुल 40 जन हाजिर हुए।

5-9-2009 तीसरी सभा शनिवार शाम 8 बजे।

सभापति जी ने फरमाया, कि इन्सान का जीवन संगत पर निर्भर करता है वरासत का भी बहुत असर पड़ता है, वरासत बदली नहीं जाती, संगत हमारे पर बहुत असर करती है, अच्छी संगत में इन्सान अच्छा बनता है बुरी संगत में बुरा बनता है श्रीमान जी ने बुरी संगत में पड़कर अपनी पढ़ाई में फेल होने की बात सुनाई बाद में अच्छी संगत मिली तो फर्स्ट डिविजन में परीक्षा पास की। रगां और बिल्ला की संगत का उदाहरण देकर बुरी संगत का नज़ारा पेश किया, इन्सान का स्वभाव थोड़े दिन की संगत में रंग बदलता है।

श्रवन कुमार की सेवा का उदाहरण बहुत ही सुन्दर ढंग से पेश किया। भगवान देवात्मा की संगत के उच्च असर होते हैं इस संगत के उच्च असरों में रहकर इन्सान की काया कल्प होती है।

पंडित नेत रामजी की जीवन लीला बड़े सुन्दर ढंग से सुनाई। श्रीमान पी. वी. कनल जी के एल. एल. बी की परीक्षा में पास होने और उनके अपने उपकारियों को याद करके धन्यवाद देने की सच्ची कथा सुनाई। इस सभा में 100 के करीब हाजरी थी।

6-9-2009 चौथी सभा ऐतवार सुबह सभा के शुरू में श्रीमान जी ने हाजरीन को सवाल किया कि नेचर या कुदरत किसे कहते हैं चारों जगतों के समूह को नेचर कहते हैं, (1) भौतिक जगत (2) वनस्पति जगत (3) पशु जगत (4) मनुष्य जगत।। नेचर का विस्तार इतना विशाल है कि इसका अनुमान लगना मुशकिल है, हमारी धरती ने बिना बाकी ग्रहों पर जीवन है या नहीं इसका अभी पूरा पता नहीं चला। पौधे भी जीवन रखते हैं, अमीबा से लेकर बड़े से बड़े जीव के समूह को पशु जगत कहते हैं, विश्व के सारे इन्सानों को मिलाकर मनुष्य जगत कहलाता है।

आकाश में गलैक्सी के बारे बहुत सुन्दर ब्यान किया, बाकी मतों का कहना है कि कुदरत को बनाने वाला परमात्मा है। जड़ और शक्ति के मेल को नेचर कहते हैं नेचर स्वयं भू है इसलिए इसे बनाने वाला कोई नहीं। नेचर में नियमों का राज है, नियमों के उदाहण देकर बात को स्पष्ट किया।

श्रद्धा भाव पर ब्यान किया श्रद्धा पाने के लिए दूसरों के गुण देखो श्रद्धाभाजन वह जन होते हैं जो किसी गर्ज के बिना सेवा करते हैं, ये सभा बहुत अच्छी थी, इसमें 60 जनों की हाजरी थी।

6-9-2009 गाँव केसूपुरा

साथी सेवक श्रीमान हरदेव सिंह के घर सभा

का प्रोग्राम 3 बजे रखा गया।

सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने हरदेव सिंह के नये घर प्राप्त करने और घर में प्रवेश करने की परिवारिक जनों को हार्दिक बधाई दी।

आगे श्रीमान जी ने बताया कि हम चारों जगतों के साथ सलूक करते हैं जैसा व्यवहार हम करते हैं वैसा फल हमारी आत्मा को मिलता है। हम अच्छे वा बुरे बनते रहते हैं, पुण्य और पाप के बारे में बताया, किसी बजूद को बेहतर बनाना पुण्य और किसी वजूद को पहले से बिगाड़ना पाप होता है, श्रीमान जी ने बताया इस घर को पहले से बेहतर बनाना और आप भी जीवन में उच्च भाव पैदा करके तरक्की करना धर्म है।

गुरु महाराज सारे सम्बन्धों में शुभ अमलों की शिक्षा देते हैं, सभा के आखिर में सभापति जी ने हाजरीन तथा हरदेव सिंह के घर सभा में शामिल होने पर हृदय के गहरे भाव से धन्यवाद किया।

सारी संगत में मिष्ठान बांटा गया। सभा में 65 के करीब हाजिरी थी।

6-9-2009 पाँचवी सभा ऐतवार रात 8.00 बजे, मल्लेका सभापति जी ने फरमाया हम सारे इन्सान सुखी रहना चाहते हैं सुख ढूंढते-ढूंढते दुःख मिलता है, इसका कारण अज्ञानता है, सुखी रहने के लिए अपने स्वभाव में तीन गुण होने जरूरी हैं, पहला गुण (हमदर्दी का भाव)

मेहनत का अभ्यास करने से यह गुण पैदा हो सकता है, किसी जीव की दुख मुसीबत में सेवा करना हमदर्दी है, हमें हमारे नीच भाव गुमराह करते हैं।

बहुत सन्मान के योग्य श्रीमान ईश्वर सिंह जी के होस्टल में बच्चों प्रति हमदर्दी के भाव को बहुत ही सुन्दर ढंग से ब्यान किया।

दूसरा गुण (शुक्रगुजारी का भाव) खुदगर्ज इन्सान को अपने उपकारी नज़र नहीं आते, दूसरों के गुण व उपकार याद करना शुक्रगुजारी का भाव है, जो जन अपने उपकारियों को सताता है गुरु महाराज जी के सामने, वह जन खुदगर्ज कमीना, व पापी कहलाता है, इस सभा में 115 जनों के करीब हाजरी थी।

सोमवार 7-9-2009, सुबह 8.30 बजे

सभापति जी ने फरमाया, हमारा जीवन नीच सुखों के अधीन है, हमेशा खतरे में है, विजेन्द्र माईकल जैक्सन, ये सब दुनियां के बड़े लोग लेकिन नीच सुखों के अधीन होकर किस तरह जीवन बर्बाद किया बड़े स्पष्ट रूप में खुलासा किया।

गुरु महाराज का फरमान है कि नीच भावों से अजादी पाओ उच्च भाव पैदा करो,

नशे व स्वाद अनुराग के गुलामी के बहुत से उदाहरण दिये, नीच घृणा का भाव हमारा दुश्मन है, जब हमारी किसी इच्छा पर चोट लगती है, तो गुस्सा हमारे पर हावी हो जाता है, हम अपना नुकसान करते हैं औरों का नुकसान करते हैं, दिल्ली के पोस्ट मास्टर की गुस्से की गुलामी की घटना सुनाई। हरियाणा के एम.एल.ए. के परिवार की घटना विस्तार से सुनाई,

बहुत सम्मान के योग्य श्रीमान देवत्व सिंह जी के प्रचार समय एक लड़के की नीच घृणा की गुलामी से श्रीमान जी को पत्थर मारने की सच्ची कथा पेश की। ईसामसीह को नीच घृणा के गुलाम लोगों ने किस तरह उत्पीड़ित किया, गुरु अर्जन देव के तत्ती तवी पर जलाने की कथा सुनाई। गुरु महाराज के प्रभावों के छींटे जब किसी जन पर पड़ते हैं तो वे जन नीच घृणा से मुक्ति पाते हैं, इस दर जो जन आएंगे

वह नीच भावों से अजादी पाएंगे, ये सभा बड़ी प्रभावशाली रही 75 जनों की हाजिरी थी परिवारिक जनों ने सारी संगत की तन मन से सेवा की और मिष्ठान बांटा गया।

(1) हरदेव सिंह जी, मैं काम वासना का गुलाम था और गल्त काम करता था लेकिन गुरु महाराज की संगत में मैं बच गया हूँ, बहुत बार अपने आपको सम्भाला है, आगे प्रण करता हूं कि मैं जीवन में पवित्र रहूँगा, अपनी धर्म पत्नी का धन्यवाद किया।

(2) भजन डोड ने महीने के लिए शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा की।

(3) गुरदीप कौर धर्म पत्नी राम चन्द्र जी, अपने बड़े बच्चे को गुरु दर से जुड़ने की फरियाद की श्रीमान मेहरसिंह, श्रीमान अजीत सिंह, श्रीमान सुन्दर लाल का धन्यवाद किया (1800 रू० मन्दिर के लिये दान मिला)

शोक समाचार

बहुत शोक कि निम्नलिखित धर्म सम्बन्धी पिछले महीनों परलोक सिधार गए।

1. श्रीमती प्रेम लता जी चहिल हरिद्वार अपने भाई के पास अचानक 21, 22 सितम्बर को परलोक चली गई।
2. श्रीमती गंगा सिंह जी जयरथ देहरादून में 90 वर्ष से ऊपर की आयु में परलोक चली गई।
3. श्रीमान चन्द्र मोहन जी अहमदगढ़ (लुधियाना) छोटी उमर में अचानक चले गए।
4. श्रीमान पुरुषोतम जी अग्रवाल, धर्मपति श्रीमती अंगना जी भी अचानक छोटी उमर में जुदाई दे गए।
5. श्रीमान बाबू राम जी, गोनियाना मण्डी प्राय: 90 वर्ष की उमर में परलोक चले गए।

सब देह त्यागी आत्माओं के लिए परलोक में उचित सामान और सम्बन्धि प्राप्त होने और आत्माओं को शान्ति मिलने और परिवारिक जनों को धैर्य प्राप्त होने की हम हृदयगत कामना करते हैं।

मंत्री, देवधर्म मिशन

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए., (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160036*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts